नरेन्द्र मोहन के नाटकों में लोक नाट्य शैलियों का उपयोग

सुनीता

पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.

प्रस्तावना :-

लोक नाटय शैलियों का उपयोग:-

काव्य का क्रिया हो जाना ही नाटक की संरचना हैइस संरचना के विविध आयाम होते है । नरेन्द्र मोहन अपने पहले नाटक से ही इस सिध्दान्त से अवगत होकर उससे अपना सरोकार स्थापित कर लेते है । यह नरेन्द्र मोहन की नाटय कला का अपना वैशिष्टय है । नाटकों के लिए दुहरा ताना बाना है एक है गायक-गायिका का और दूसरा है समाज के आमने सामने सत्य का साक्षात्कार करता हुआ और विद्रोह का सामना करता हुए कबीर,शिव,हमीद सीदीमौला,तुकाराम का चरित्र । कहै कबीर------- में ऐसी लोक नाटय शैली नहीं है जिसे किसी प्रदेश विशेष की कहा जाये ।काम करते समय ही शैली विकसित हुई है-एक अलग किस्म की लोक नाटय शैली । उसके लिए भी संगीत केन्द्र में आ गया है । कुछ विध्दान उनके नाटकों में ब्रेख्तीयन टेकनींक का प्रयोग मानते है इसका उत्तर देते हुए नरेन्द्र मोहन कहते है "मुझे नहीं लगता कि नाटक के लिए हमने ब्रेख्तीयन शैली का उपयोग किया था । वह बिल्कुल दूसरी शैली है । स्वयं ब्रेख्त ने भी वह शैली हमारी नाटय परम्परा से ही ग्रहण की है-विशेष रुप से लोक नाटय शैली से । इसलिए इस नाटक के रंग-फार्म को ब्रेख्त से जोडना उचित नहीं है । उसमें भारत, चीन,जापान की शैलियों से प्रभावित होकर अपनी एक अलग शैली विकसित की ।" "कहै कबीर ---------- को यदि बेख्त शैली से देखा जाय तो यह नाटक उससे भिन्न है ।"[46]

नाटकों में शैली का चुनाव आलेख के अनुसार तथा उसी के अनुरुप होता है किसी अन्य शैली को चुनना जबरदस्ती हेागी ।नाटककार का कहना है कि मैने "कहै कबीर ---------- के लिए दो शैलियों को अपनाया-यथार्थवादी शैली और नाटय शैली । नाटक में जहाँ रोजमर्स की घटनायें है,आम आदमी के साथ जुडे हुए प्रसंग है,जहाँ जीते-जागते आम जिन्दगी के पात्र है उनके लिए यथार्थवादी शैली को अपनाया गया है । वे इस शैली से ही अभिव्यक्ति पा सकते है । कबीर कवि है,गायक है,लोक मानस से जुडे हैा उनके गीत-संगीत ने एक दूसरी शैली की तरफ इशारा किया है । इसीलिए लोकनाटय शैली को अपनाया गया । वे खुद ही नाचने लगते है,भाव विठ्ल हो जाते है । इसलिए कबीर तथा उनकी मंडली के चरित्रों को उभारने के लिए लोक नाटय शैली ही उपर्युक्त थी । "सींगधारी" में प्रचलित लोक कथा को आधार बनाया गया है । "कलन्दर" में यथार्थवादी शैली को अपनाया है क्योंकि 'कलन्दर' का कथ्य है सत्ता का उद्घाटन तथा सत्ता के व्दारा सच कहने वाले को समाप्त करना । नरेन्द्र मोहन की नाटयकला इसी सत्य का प्रकटीकरण है माहेश्वर का कहना है कि" किसी भी लोक शैली से कुछ भी उधार न लेकर अपनी एक ताजा शैली विकसित करने की कोशिश की है" [47]

"कहैं कबीर--------" में नरेन्द्र मोहन ने गायक-गायिका का प्रयेाग करके ने इस नाटक में लोक शैली का समावेश करने की कोशिश की है जिसमें नर-नारी के संवादों, गीतों से नाटय-व्यापार को गति मिलती है इन्होंने अपने नाटकों में लोंकरंग की शैली को अपनाया अवश्य है किन्तु अपनी शर्तो पर, ब्रेख्त की शर्तो पर नहीं । अन्तर सिर्फ इतना है कि ब्रेख्त गीतों का प्रयेाग भावप्रवाह में बाधा डालने के लिए करते है ताकि प्रेक्षक भाव - प्रवाह में बहकर अपनी मनोबुध्दि और तार्किक क्षमता को तिरोभूत न हो जाने दे,जबकि भारतीय लोक शैली में प्रयुक्त गीत वातावरण केा सजीव बनाते है और नाटय-व्यापार को गति प्रदान करते है नरेन्द्र मोहन ने जिस तरह

लोक कथा पर आधारित 'सींगधारी' लिखा उसी तरह इतिहास की संघर्ष-गाथा को"कलन्दर"में उजागर किया है ।"कलन्दर " में नाटककार नरेन्द्र मोहन आम आदमी के "कलन्दर " बन जाने की गाथा गढते है जिसमें बुध्दू लेखक के मूलसामाजिक-सरोकार का वाहक बनकर उभरता है ।

"नो मैस लैण्ड" मानवीय चेतना का वह अंश है जेा अपने भूगोल और इतिहास को गड्ड-मड्ड होता देखकर असमान्य और पागाल हो जाता है । इस नाटक के वे प्रसंग जो एर्ब्सड के समानान्तरसंवेदन का एक लोक रचते है,ज्यादा मार्मिक बन पडे है जैसे पंजाबी लेाक-गीत का प्रयोग और बिशनसिंह का एक पेड से लिपट जाना अतीत की स्मृतियाँ,जमीन से जुडी यादें,लोक-गीत और पूर्वदीप्ति शैली में आजादी के तराने और इन सबके बीच में पात्रों का मानसिक असंतुलन इस नाटक को एक नयी संरचना प्रदान करता है-जहाँ राजनीति,धर्म,जाति,संप्रदाय,भूगोल,इतिहास,ओर अपनी जमीन से कट जाने का दर्द सब और सबकुछ एक जटिल सांझे अनुभव के रुप में संक्रान्त हो जाते है । इस रुप में इस नाटक का फार्म काव्य की शर्तो पर तैय्यार हुआ है 'सींगधारी' इनका पहला नाटक है । इसमें लोककथा के माध्यम से वर्तमान राजनीति के हिंसक ओर क्रूर रुप को दिखाया गया है । लोककथाओं का नाटक में प्रयोग करने की अपनी कुछ सुविधायें है । लेाक कथायें जनमानस में संस्कार रुप में मौजूद रहती है । रचनाकार को उसे एक नया रुप,अर्थ देना होता है । सन्दर्भ में मूल बात यह है कि काई रचनाकार उस लोक कथा अथवा एतिहासिक-पौराणिक आख्यान का वर्तमान सन्दर्भ में कितना सर्जनात्मक उपयोग कर सका है । 'राजा के सिर पर सींग' है यह बात किसी को पता नहीं है,हजामत बनाते समय नाई पहली बार उस सींग को देख लेता है लेकिन राजा के भय से इस तथ्य को वह मन में छिपाये रखता है । आखिरकार बात हजम नहीं होती और वह एक वृक्ष को यह सच्चाई बता देता है,फिर तो यह खबर जंगल में एक आग की तरह फैल जाती है नाई पकडा जाता है और उसे फांसी की राजा सुनायी जाती है । यही वह लोककथा है जिसका प्रयोग नरेन्द्र मोहन ने इस नाटक में किया है 'सींगधारी' सत्तापक्ष की हिंसक प्रवृत्तियों का प्रतीक है जिसके शिकार प्राय; सभी है किन्तु उसका विरोध करने की शक्ति किसी में नहीं है जो विरोध करता है खत्म हो जाता है । इस प्रकार इस मिथकीय चरित्र को आधुनिक जीवन की विसंगतियों,विद्रूपताओं ओर विडम्बनाओं के जीवन्त प्रस्तुतीकरण का माध्यम बनाया गया है विसंगत शैली के प्रयोग से नाटक को सघनता और नाटकीय तनाव में वृध्दि हुई है और वह नाटय रचना के आधुनिक शिल्प को समायोजित करने में सफल भी हुआ है ।

निर्देशक नाटक के मंचन के लिए किस शैली को अपनाता है इस पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है । देवेन्द्रराज अंकुर ने "कहैं कबीर सुनो -------" के मंचन के लिए नाटयधर्मी शैली और यथाथवादी शैली को अपनाया था । यह एक निर्देशक का दृष्टिकोन है, दूसरा निर्देशक किसी अन्य शैली का सहारा भी ले सकता है । उसकी इस स्वतन्त्रता में लेखक बाधक नहीं बन सकता । पर जब हम नाटक को पढते है । और यह जानने की चेष्टा करते है कि मंचन के लिए लेखक किस प्रकार की शैली चाहता है तब हमें गायक-गायिका की उपस्थिति की ओर ध्यान देना चाहिए ।ये दोनों पात्र लोकगीत शैली का सहारा लेता हुए नाटक की विभिन्न स्थितियों,घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत करते है । ऐसे दृश्य नरेन्द्र मोहन के कवि और कबीर के कवि के साथ एकाकार का एहसास भी कराते है । नाटक में लोकगीत का प्रयोग प्रारम्भ और अंत में कौरस (ग्रीक) की याद दिलाता है । आदि और अन्त में होने से वह वृत्ताकार हो जाता है । 'सींगधारी' में लेखक ने लोककथा और मुख्य कथा दोनों को साथ लेकर चलने के पीछे भी नाटककार का मकसद है। लोक कथा से वर्तमान कथा का तार हमेशा जुडा रहता है । इससे एक भेद प्रकट होता है कि स्थितियाँ बदली नहीं है । वास्तविक स्वतन्त्रता अभी नहीं मिली है ।"कहैं कबीर-------" छोटे-छोटे दृश्यों का सरल,सहज,लोक कथात्मक वातावरण का नाटक है । अगर हम कहना चाहें कि वह नौटंकी या किसी खास लोक-शैली में रचा गया है तो गलत होगा । वह अपने आप में स्वतन्त्रता का,जननाटक का आभास देता है । बल्कि आरंभ से ही नुक्कड नाटक के स्वर में लय में विकसित होता हुआ सा लगता है उदाहरणार्थ नाटक का आरम्भ संगीत की लयताल,गायक-गायिका के गीत और जन समूह की भीड एकत्र होने से होता है । गायक-गायिका अपने गायन में कबीर का बखान करते है । लेकिन लोगों के मन में क्रोध

है,आक्रोश और प्रतिहिंसा है । "कुछ नहीं होगा भक्ति-वक्ति से । कौन बचायेगा हमें दरिदों से?"[48] अंधेर नगरी की तरह यह नाटक लोक-धर्मी परम्परा का ही नाटक है,यंथार्थवादी परम्परा का नहीं । अकुर ने इस ओर भी इशारा किया है कि किसी भी लोकशैली से उधार न लेकर लेखक ने अपनी ही ताजा शैली विकसित की है। इसताजा शैली का महत्वपूर्ण अंग है । संगीत और कविता एक प्रकार की बंधी-बंधायी शैली या शैलीबध्दता की दृष्टी से यह एक 'मुक्तजन नाटक' के रुप में हमारे सामने आता है । हिन्दी में शैली वध्दता ने भी किस प्रकार नाटय लेखन ओर रंगकर्म को एकांकी और सीमित बनाया,"कहैं कबीर------" उसके विरुध्द एक जनात्मक स्वर है । "नो मैस लैण्ड" में पूर्व दीप्ति शैली से अब्दुल को अंधेपागल गायक के रुप में पहचान कर नाटय स्थितियों को और सघन बना दिया है । प्रलाप शैली में वकील का यह कथन अंतरंग जीवन और वाध्य स्थितियों में परस्पर विरोध दिखाकर राजनैतिक स्थितियों को अमानवीय करार देता है । "मुझसे मेरी महबूबा छीन ली तकसीम करने वाली सियासत ने ।मैं दोहरा पागल हूँ यारों ------- मैं इश्क के घोडे पर सवार"[49] नाटक ने प्रतीक,फँटेसी शब्द पूर्वदीप्ति पध्दति,लोकगीत,धुनो एवं पात्र के क्रिया व्यापारों को नाटय रचना में ढालकर विचार,विद्रोह,एवं संघर्ष की जिन्दगी का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत किया है । हीरा का औरत को चूमना मृत औरत पर कुत्ते की तरह चढजाना ये सब स्वप्न शैली को नाटय शैली में ढालकर नाटककार ने अतियथार्थि का ऐसा चित्र खींचा है कि वह विद्रूप स्थितियों के बीच मानवीयता पर क्रूर व्यंग्य बनकर उभरा है । व्यंग्य शैली का यह नाटय संयोजन नाटयत्मक संघर्ष को सार्थक पहचान देता है ।

नाटककार ने लोकजीवन से जुडी परम्पराओं का बहुत सफल उपयोग "अमंगगाथा "में कर नाटक को अधिक रोचक और सार्थक बना दिया है ।नाटक का प्रारम्भ ही लोक नाटय की तर्ज पर गायक मंडली मंडली के कथा गायन से होता है । नाटक के आदि,मध्य ,और अन्त में सर्वग अभंग की सामूहिकता विद्यमान है ।यह केवल भक्त तुकाराम का नाटक होता तो वह व्यक्तिवादी बनजाता । पर लेखक के सामने तुकाराम के रुप में भी एक समूह है । एसा समूह जिसके सदस्य बिना किसी कारण के जाति के दुष्ट-चक्र में फँसते गये,पिसते गये ।

जीवनभर के विरोधी-तनायों को सहते और कर्मपथ पर चलते हुए तुकाराम आत्म लोचन की प्रक्रिया में नाटकीय एकालाप का सहारा लेता है । नाटककार ने 'अभंगगाथा' और 'मिस्टर जिन्ना' में एकालापों को नाटय शैली में ढालकर सार्थक एवं साभिप्राय प्रयोग किया है ।'अभंगगाथा' में तुकाराम फतेहखाँ और शेख मुहम्मद पात्र ही नाटय एकालाप प्रक्रिया से गुजरे है । इसलिए ये नाटक नाटय एकालाप की कमजोरी न बनकर उसकी प्रभावान्विति व एकान्विति के वाहक बन गये है । 'मिस्टर जिन्ना' में जिन्ना बदरु ने एकालाप की प्रक्रिया अपनायी है । जिसका नाटक में सार्थक प्रयोग हुआ है ।

डॉ.नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों के फार्म के लिहाज से एक लचीली कार्य शैली और प्रस्तंति के हिमायती है ।अपनी एक बातचीत में उन्होंने स्वयं स्वीकारा है कि वे नाटकों को जनमानस के अधिक करीब लाना चाहते है इसीकारण उनके नाटक भारतेन्दु के नाटकें का सा खुला बर्ताब रखते है । संस्कृत नाटकों और लोक-नाटय कलाओं का मिला-जुला रुप उमंगगाथा में दीख पडता है । यह नाटक चरित्र कथा,संगीत,अध्यात्म,समाज,इतिहास,और आधुनिकता की समन्वित प्रस्तुति है । वस्तुत: देखा जाय तो गीत-संगीत नाटक के कथानक का अविभाज्य अंग है क्योकि तुकाराम की आवाज के चले जाने पर रुखमा गाती है । "रात काली,गगरी काली,यमुना की धारा भी काली है माय----- का अलाप छोडती है तेा तुका गा उठता है-विष्णूनाम की स्वामिनी काली"[50] मंगला ह्रदय परिवर्तन हो जाने पर गाती है-"सुन्दर श्री रुप खडा ईट पर,करकटि तट पर"[51] यहाँ पर गीत शैली का सुन्दरतम प्रयोग हुआ है तुकाराम के अभंगों के तैरने के प्रसंग में । गीत नाटक की शक्ति है ।

यह नाटक शब्द और रंग, शब्द और संगीत, नाटयालेख और नाटयनुभति,शब्द,लय,ताल,संगीत और नृत्य के संयोजन से एक नयी रंग शैली नाटक क लिए सौन्दर्य की संभावनायें सामने लाता है । 'अभंगगाथा' शीर्षक से ही स्पष्ट है कि तुकाराम के अभंगों का सन्दर्भ नाटक में रहेगा ही,लेकिन यहाँ शोध-ग्रन्थों जैसी उध्दरण

शैली नही है बल्कि नाटक में व्यंजित तत्कालीन एवं समकालीन खंडित न की जा सकने वाली परिस्थितियों और विडम्बनाओं से ही नाटककार का सरोकार है।

'कलन्दर' में नाटककार ने बिल्कुल अनछुए विषय को उठाया है। ऐसा विषय जिस पर पहले न लिखा गया हो,आकर्षिक तो करता ही है। शिल्प की दृष्टी से भी पहले दोनों नाटकों की तरह नाटककार ने इसे प्रधान नहीं बनाया है। नाटककार यहाँ भी संगीत से पूरी तरह मुक्त नही है। इस नाटक के लिए यथार्थवादी शैली को ही लेखक ने अपनाया है। पूरे नाटक का फार्म एक ही है। नाटक का सम्बन्ध भी इतिहास से ही है। इसमें लेखक ने इतिहास और कल्पना दोनों का सहारा लिया है। इसी तरह "मिस्टर जिन्ना" में भी लेखक ने किसी लोक कथा का सहारा नहीं लिया इसमें भी इतिहास और कल्पना का समन्वय है। प्रतीकों,मिथकों,फैटेन्सी के माध्यम से नाटक की विषय-वस्तु को गतिशीलता प्रदान की है लेखक ने। यथार्थ वादी शैली को ही अपनाया है।

इस तरह लेखक ने अपने नाटकें में विषय वस्तु के अनुसार ही शैलियों का प्रयोग किया है।

सूच्य दृश्यों का प्रदर्शनः-

नाटक दृश्य काव्य है और सर्वचिदित है कि नाटक में कहने का भाव मुख्य नहीं होता,मुख्य होता है दिखाने का भाव। अतः नाटक में दृश्यत्व विशिष्टता रखता। नाटककार जो कहना चाहता है, उसे दृश्य रुप में दिखाना उसकी अनिवार्यता है,क्योकि नाटक पढने के लिए नहीं लिखा जाता है इसलिए वह नाटकें का विधान इस प्रकार तैयार करता है कि उनकी दृश्यत्व की बाधाएं न्यूनतम हों। कहा जाता है कि दृश्यत्व ही नाटय रचना का विधान है,वह मूल नियम है जिससे नाटक का सारा कुछ और स्वयं नाटककार भी अनुशासित होता है। समग्रतः दृश्वत्व ही नाटयरचना विधान है। यही कारण है कि नाटककार हो रंगमंच से जुडे रहने की सलाह दी जाती है। नरेन्द्र मोहन ने अपने छ.नाटकों 'सींगधारी' 'कहैं कबीर---------' 'कलन्दर' और 'नो मैंस लैण्ड' 'अभंगगाथा','नो मैंस लैण्ड' तथा 'मि.जिन्ना' को पूर्वाभ्यास से प्रदर्शन तक की सारी स्थितियों से गुजरते हुए देखा है और महसूस किया है कि जब कविता के शब्द अपनी रंगमंचीय संभावनाओं के साथ दृश्य रुप में घटित होते है तो नाटक के बीच एक गहरी संवेदना उत्पन्न होती है। नाटककार अपने भीतर से बाहर आता है और इस बात कों नरेन्द्र मोहन भी स्वीकार करते है कि वे कविता के शब्दों से नाटक के क्षेत्र में आये है। दृश्य काव्य के रुप में उन्होंने एक नाटय रचना में दृश्यत्व एवं काव्यत्व के अपेक्षित संतुलन का अनुभव किया है। दृश्यत्व की प्रक्रिया का पूरा विधान 'सींगधारी' में मिलता है तो 'कहैं कबीर---------' में इसका अभाव खटकता है। क्रमशः अध्ययन,चितंन,एवं नाटय प्रस्तुतियों को देखने,उसके विधान को समझने के साथ ही बार-बार संशोधन से वह सारी कुशलता उन्होंने अर्जित की होगी,जिसकी पूरी झलक 'नो मैंस लैण्ड' में मिलती है। इसलिए सींगधारी नाटक में दृश्यत्व की जो स्थिति है ठिक वही स्थिति 'कहैं कबीर---------' , 'कलन्दर' और 'नो मैंस लैण्ड' में नहीं है। नाटककार नरेन्द्र मोहन ने नाटय रचना की यह यात्रा सीढ-दर-सीढी पूरी की है। 'कलन्दर' नाटक में सूच्य दृश्यों की वर्जना को कई स्थलों पर तोडा गया है।[52] अब तक हिन्दी रंगमंच पर रचना विधान के अंकुश के कारण हत्या जैसा दृश्य प्रत्यक्ष दिखाना वर्जित था परन्तु नाटककार ने पूरे साहस के साथ इस विधान को तोडा है और नाटक में तुराब व्दारा मौलवी युसूफ तथा अब्रूवक्र तूसी व्दारा दरवेश सीदीमौला की हत्या होती दिखायी गयी है यद्यपि हत्या के इन दोनों दृश्यों में हत्या के कोई संकेत नहीं है क्योंकि तुराब के बार से युसूफ घायल होता है और सीदी मौला पर बार-बार प्रहार करने से जमीन पर वह लुढक जाता है वह मरता हो या नहीं यह स्पष्ट नहीं है। नाटक के ये दोनों दृश्य नाटय परंपरा एवं प्राचीन रचना विधान की दृष्टि से प्रतिकुल है।

इस नाटक का तीसरा और संभवतः रचना विधान की दृष्टि से सर्वथा असंगत विन्दू है-अबूबक्र तूसी का अपनी अदभूत शक्तियों का साक्षात् प्रदर्शन।इस दृश्य के लिए नाटककार का निर्देश दृष्टव्य है "अबूवक्र तूसी के हाथों में जलती हुई सलाखें आ जाती है,फिर अचानक वह मोम की तरह पिघलने लगती है और अन्ततः कवच कुण्डलों में ढलने लगती है।"[53] नाटक की इस छोटी से घटना को कैसे दृश्योंपकरणों एवं आयामें का अभाव भी

है परन्तु ध्वनि एवं प्रकाश के संयोजन अवश्य है ।इस नाटक में एकाध स्थलों को छोडकर शेष अन्य जगहों पर दृश्यत्व की पकड मजबूत प्रमाणित हुई है । कहीं-कहीं भाषिक माध्यम का सहारा लिया गया है रचनाविधानकी दृष्टी से नाटक की कथा दृश्यमान होती है घटनायें दृश्यत्व ग्रहण करती है । जबकि नाटयानुभूति को दृश्यत्व देना अनिवार्य था ।

'नो मैंस लैण्ड' इस नाटक की मूल चेतना सआदत हसन मंटो की कहानी टोबा टेक सिंह है परन्तु इसमें लेखक कुछ स्वतन्त्र प्रसंगों,घटनाओं,पात्रों की उद्भावना करके उसे कहानी के नाटय रुपान्तर जैसे दोष,से बचा लिया है । यह नाटक मूलत: भारत विभाजन के समय हुई ऊन अमानवीय घटनाओं की व्याख्या करता है,उन दंगों और फसादों को दृश्यत्व देता है जो अब इतिहास बन चुकी है । यह नाटक भारत-विभाजन के बाद लाखों लोगों के साथ हुए हादसे को दश्य रुप में दिखाता है । नाटक में जो दृश्य घटनायें सामने आती है,उससे यही स्पष्ट होता है। कि राजनीतिक क्रूरता की चपेट में आम आदमी का जीवन तबाह हो गया है । अनेक सूच्च दृश्यों की प्रस्तुति इस क्रूरता की अभिव्यक्ति के लिए जरुरी थी । सियासती दांव पेंच और गहन मानवीय संवेदना के जटिल सूत्र नाटक की घटनाओं एवं पात्रों के बीच इस तरह संगुफित हुए है कि राजनीतिक चक्रव्यूह में कभी न पडने वाले व्यक्ति के लिए उसी दल-दल में फंस जाने की त्रासदी बडी तीव्रता से उभरती है । 'नो मैंस लैण्ड' में दृश्यत्व को उभारने के लिए नाटककार ने दृश्यबंध की कल्पना प्रस्तुत की है,पात्रों का अभिनय व्यापार सजाया है,कार्य व्यापार का संयोजन किया है । एवं उसी के अनुसार चरित्र की सृष्टि की है और इन्ही योजनाओं के एकत्र संयोजन से नाटक का दृश्यतत्व प्राप्त करता है । इसकी मजबूत पकड का आभास रंग निर्देश और दृश्यबंध एवं मंच सज्जा से हो जाता है । यद्यपि नाटक का कथ्य अभिनयात्रित है,अत:दृश्यत्व ग्रहण करने की प्रक्रिया चरित्र तथा संवादों से भी जुडी है । नाटक की घटनायें मंचीय साक्ष्य से दृश्यत्व ग्रहण करते है । यह नाटक पागलखाने से शुरु होकर वहीं विस्तार पाता है । इसलिए पूरे नाटक में पागलों का वातावरण प्रयत्न है नाटक में अभिनय कर रहे पात्रों के लिए उसी के अनुरुप कार्य संपादित करना,बोलते-बोलते बहक जाना और पागलों जैसी हरकत करना, ऊटपटांग बातें करना और कार्य करते करते पेड पर चढ जाना यानी पागलों की सारी हरकतें जरुरी हो जाती है, क्योंकि पागलपन के इसी अभिनय से नाटयार्थ और कथ्य व्यंजना के स्तर पर संप्रेषित होता है तथा कथ्य के अनुरुप वातावरण का निर्माण होता है । दृश्यत्व के नियमों का पूर्ण पालन 'नो मैंस लैण्ड' में दृष्टिगत होता है और यहीं आकर यह स्पष्ट होता है कि नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों के लिए दृश्यत्व के रुप में रचना विधान के अंकुश को महसूस किया है । 'कलन्दर'और 'नो मैंस लैण्ड' में दृश्यत्व की पकड मजबूत है । नर नारायण राय अपने लेख "नाटय-वस्तु का वैविध्य" में इन सूच्य दृश्यों के बारे में कहते है-'कहैं कबीर---------' नाटक के छोटे-छोटे दृश्यों के कारण प्रयोक्ताओं को हमेशा सावधानी और सर्तकता बरतनी होगी अन्यथा प्रदर्शन उपेक्षित प्रभाव नहीं पायेगा । "सींगधारी" की प्रस्तुति संभवत: उसके चारों नाटकों में न केवल सबसे सरल होगी बल्कि शायद सबसे सफल भी हो सकती है । विषय की प्रासंगिकता और रचना से जुडी लोक कथा की पृष्ठभूमि नाटक की सफलता के दो आधार माने जायेंगे । यदि आकार को ध्यान में रखा जाये तो कहा जा सकता है कि नरेन्द्र मोहन के नाटक 60 से 70 पृष्ठों के नाटक है जिन्हें डेढ घंटे के अंतराल में प्रस्तुत किया जा सकना संभव होगा । इस अर्थ में भी उनके नाटक लघु नाटक ही ठहरते है । 'कहैं कबीर---------' 5 दृश्यों का नाटक है । "सींगधारी" 8 दृश्यों का, कालन्दर 10 दृश्यों का और 'नो मैंस लैण्ड' 5 दृश्यों का नाटक है । 'नो मैंस लैण्ड' के दृश्य बडे-बडे हैं तो कबीर के छोटे-छोटे । मंचन की दृष्टि से 'कहैं कबीर---------' के दृश्यों का इस प्रकार जल्दी-जल्दी बदल जाना अच्छा प्रभाव डालने वाला नहीं कहा जा सकता । भले ही गायक-गायिका की मुक्ति व्दारा दृश्यों को जोडे रखने की कोशिश क्यों न की गयी हो ।"[54]

"कहैं कबीर---------" का ढाँचा घटनात्मक है । दृश्यों का छोटा होना केवल इस नाटक की ही नहीं "सींगधारी" की भी कमजोरी है इसके कारण बार-बार मंच सज्जा संभव नहीं है 'कलन्दर'और 'नो मैंस लैण्ड' के दृश्य चारों नाटकों में अधिक लम्बे तथा घटना या प्रसंग को समेटे हुए है, इससे चरित्र भी ठीक ढंग से उभर

जाये है । "कहैं कबीर---------" नाटक के कार्य व्यापार के क्षेत्र स्थल कई है । बाजार,कबीर का घर, गंगा का किनारा,कोतवाली,दरबार आदि । छोटे दृश्य होने के काण्र दृश्य परिवर्तन,मंच पर आवश्यक उपकरणों को लाना और हटाना नाटक के मंचन के साथ जुडी अन्य समस्यायें है । इनका समाधान भी निर्देशक की कुशलता पर निर्भर करता है । "कहैं कबीर---------" में कबीर ब्राम्हणों,मुललाओं,कोतवाल तथा सिकन्दर लोदी से टकराता है ।वह निर्भय है छोटे-छोटे दृश्यों के माध्यम से धीरे-धीरे कबीर का व्यक्तित्व उभरता है । नाटककार ने नाटकों में "प्लैश बैंक" का प्रयोग भी किया है । छोटे दृश्यों के हेाते प्लैश बैक निरंतरता को तोड देता है । सामान्य दर्शक स्थिति के अनुरुप खुद को तुरन्त ढाल भी नहीं सकते,क्योकि स्थिति के अनुरुप मंच में बदलाव उन्हें नजर नही आता ।

जहाँ नाटककार ने फैटेसी का प्रयोग किया है वह भी मंच पर संभव नहीं है । "अभंगगाथा" में तीन अंक है पहले अंक में एक और वारकरी मंडली है तो दूसरी ओर मारपीट,अराजकता का चित्रण है दूसरे अंक मे आसमानी एवं सुल्तानी संकटों का दृश्यांकन है । सभी ओर अराजकता एवं मृत्यू का तांडव मचा हुआ है । गाँव शमशान बन गये है जिसे तुकाराम अपनी आँखों से देख रहे है ।तीसरे अंक में फतेह खाँ की मुत्यू,भंबाजी का ह्रदय परिवर्तन,तुकाराम की अभंगलिपियाँ नदी में डुबाया जाना । तुकाराम के स्वर्गारोहण नाटक का श्री गणेश होता है-तुकोबा के इस उमंग से "अम्हों धरी धन शब्दाचीज रत्ने---- दूसरे प्रवेश में युध्द की भयग्रस्त छाया है । गाँव मे मातम छाया है तुका की आवाज चली जाती है । रुखमा अमंगों के माध्यम से उसकी आवाज लाती है तुकाराम और भंबाजी के बीच का संघर्ष भी इसी प्रवेश में हुआ है तीसरे प्रवेश में भंयकर अकाल का दृश्य दिखाया है चौथे दृश्य में शेख मुहम्मद का पुनः आन्तरिक तेज का रुख अपनाने के लिए प्रवृत्त करता है । तुका ऋण चुकाने में असमर्थ पहाडियों पर भडकता है । "अभंगगाथा" में प्रथम अंक की तुलना में व्दितीय अंक अधिक प्रखर,सहान और संघषत्मिक है । नाटक में कभी-कभी कथन से ज्यादा स्थितियों की अनिवार्यता होती है-स्थितियाँ और अपने रचे गये दृश्य ही उस तनाव को रच पाते है भयानक सूखा घडना,लोगों का भूखा प्यास से मरना,तुकाराम का अकेलापन, जिजापई का आंतरिक भय,चिन्ता नाटक में आती तो है तो पर स्थापित नहीं हो पाती बस सूचना बनकर रह जाती है ये दृश्य बहुत पेने नहीं लगते । तुकाराम का यह कहना मुझे कूएँ में पडा रहने दो उसका आत्मसंकोच उस रुप में स्थापित नहीं हो पाता । क्रूध्द ब्राम्हणों व्दारा तुकाराम को पीटने का दृश्य परन्तु तुकाराम की कीर्तन मंडली व्दारा उसे चारों ओर से घेरा डालकर बचाने के पयास भंबाजी व्दारा निखराध किसानों व उनके बच्चों की हत्या आदि दृश्य संघर्ष की तीव्रता को बढाते है ।

तीन अंकों में और ग्यारह दृश्यों में छाया यह नाटक जीवन के कितने ही पक्षों का वहन करता चलता है । वस्तुतः देखा जाये तो गीत-संगीत नाअक के कथानकका अविभज्य अंग है जब हम इसकी मंचीयता पर विचार करते है एक बात विल्कुल साफ दिखायी देती है कि "अभंगगाथा" रंगकर्मियों के लिए वरदान है तो उन्हें अपनी कल्पना शक्ति ओर सृजनात्मक प्रतिभा दिखाने का अधिकतम अवसर देता है अभंगगाथा की कथा गत्यात्मक है घटनात्मक नहीं है बल्कि भावात्मक भी नहीं है "अभंगगाथा" में स्वागत कथन बहुत उत्कृष्ट बन पडे है । जब तुकाराम के अभंग इन्डायवी नदी में बहा दिये जाते है तो तुकाराम अन्दर तक हिल जाते है वहाँ का एक स्वगत कथन यह है-"क्या हाथ लगा मेरे? उपेक्षा, हताश, निर्वासन ! क्या पाया मैंने सत्य के मार्ग पर चलते हुए? घृणा,अपमान लाछन,प्रताडना कितने चाबुक लगे है देह पर!-------"[55] नाटक में राजनैतिक पक्ष के अलावा पारिवारिक,सामाजिक एवं आर्थिक पहलू बडे ही महत्वपूर्ण है रंगमंच की दृष्टी से भी यह एक सफल नाटक है दृश्य रचना अधिकतर दोनों वारकरी ही करते है । कभी वे सूत्रधार बन जाते है तो कभी अन्य पात्रों की भूमिकाओं में उतर आते है । नाटय एकालाय नाटक की कमजोरी न बनकर उसकी प्रभावान्विति व एकान्विति के वाहक बन गये है । फतेह खाँ की मौत उधर तुकाराम का नयी राहों पर चले जाना या लापता हो जाना ।इसी प्रकार नाटक में अंधेरे का कई बार सार्थक प्रयोग किया है । जिससे मुक्तिवोध की 'अधरे' में कविता याद आती है । मंगला का आना उसका पूरा दृश्य ही अपने में संक्षिप्त लगता है । लेकिन उस चरित्र में वैषम्य,पाखण्ड,समाज

की निम्न प्रवृत्तियों के कुचक्र के साथ-साथ अन्ततः जो कलात्मक उत्कर्ष चरित्र परिवर्तन,उमण गायन और नृत्य के,तन-मन-बुध्दी के सौन्दर्य का तेज है वह रंगमंच पर ही कल्पना और अभिनय कला के,नृतय-मुद्राओं, संगीत, व्यकित्व, और दर्शक मानस को उसके तन्मय भाव को सृजित कर सकता है।

कुल मिलाकर 'अभंगगाथा' एक उत्कृष्ट मंचीय कृति हतै इसमें दृश्यो की जटिलता नहीं है। नरेन्द्र मोहन का नाटकीय दृष्टि से यह सफल नाटक है। "मिस्टर जिन्ना" में नाटकीय शब्द की एक नहीं,एक-साथ अनेक परते मिलें कि शब्दों के भीतर कई बार शब्द और वाक्य के अन्तरालों में मौन हरकतें काम करती रही है और संवादों मे दूर तक अनुगूंज बनी रहती है। इसमें दो अंक है। पहले अंक के पहले दृश्य में लाहौर के एक हॉल का दृश्य है जहाँ जिना के ड्राइवर नौकर सामप्रदायिक राजनीति के बारे में चर्चा करते है। यह एक ही स्थान पर घटनायें घटित होती है। दूसरे दृश्यों में मुंबई के मालाबार हिल्स माउट प्लेजैट रोड पर जिन्ना के बंगले का दृश्य है जहाँ जिन्ना के परिवार का दृश्य है। इसी दृश्य में जिन्ना के जीवन का वह दिन जिसमें जिन्ना की सोच को ही बदल दिया (कांग्रेस का नागपूर इजलास-दिसम्बर,1920) इस अधिवेशन में ही जिन्ना को कांग्रेस से अलग होना पडा। फिर उसके परिवार का दृश्य है। जहाँ उससे रत्ती हमेशा के लिए चली गयी। वह दीना भी जिन्ना से अलग हो गयी अन्त में सामप्रदायिक दंगे की स्थिति है। जिन्ना स्वतन्त्र पाकिस्तान की घोषणा करता है। 'दूसरे अहंक के प्रथम दृश्य में कराची के गवर्नमेंट हाउस का दृश्य है जहाँ बाहर बलबाइयों के व्दारा दंगा कराया जाता है जिसमें निहत्थे हिन्दू-सिक्ख मारे जाते है भीड जिन्ना के हाउस के सामने उसे कोसती है,धिक्कारती है। दृश्यहीन में हिल स्टेशन जियारत 'पाकिस्तान' का स्थान है। जहाँ जिन्ना अपना इलाज करवाने आता है। इस नाटक में 'सींगधारी', 'कहै कबीर------' की तरह अनेक दृश्यों,घटनाओं जो पल-पल बदलती है। दृश्यों,घटनाओं प्रसंगों की बहुलता है। एसा नहीं है। घटनायें प्रसंग जिन्ना के घर के आसपास या घर में ही घटित होती दिखायी गयी है जिसके कारण इसके मंचन में भी परेशानी नहीं हुई है। सूच्य दृश्यों का प्रदर्शन भी औचित्यपूर्ण एवं उत्कृष्ट बन पडा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नाटकीय शब्द और नरेन्द्र मोहन-डॉ.गुरुचरण सिंह, सार्थिक प्रकाशन 100 ए. , गौतम नगर,नई दिल्ली।
2. नरेन्द्र मोहनः सृजन और संवाद-सं.डॉ.वीरेन्द्र सिंह, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली-110030 प्र. संस्करण
3. नरेन्द्र मोहन रचनावली-खण्ड चार,सम्पादक-गुरुचरण सिंह और सुमन पंडित,संजय प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2006 , 4 अंसारी रोड, दरियागंज-नयी दिल्ली -2

सुनीता

पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.